श्रीहित श्रृंगार विलास

(1)

नमो नमो जय श्रीहरिवंश

रसिक अनन्य वैंनु कुल मंडन, लीला मानसरोवर हंस।।

नमो जयति श्रीवृन्दावन सहज माधुरी, रास-विलास-प्रसंश ।

आगम-निगम अगोचर राधे, चरन-सरोज 'व्यास' अवतंश।।

(2)

जयति जमुना विमल वर वारि

शीतल तरल तरंगिनी, रत्न बद्ध विवि तटी विराजत।

प्रफुलित विविध सरोजगन, चक्रवादि कुल हंस राजत।।

कूल विषद वन द्रुरम सघन, लता भवन अति रम्य।

नित्य केलि हरिवंश हित, सु ब्रह्मादिकनि अगम्य।।

(3)

श्री श्रृंगार अश्टक

मज्जन के हेत मणि चैकी जू बिछाइ दई,

बैठी तापर आय कैं लडैंती लड़काइ कैं।

खोलि दियो जूरा वगराइ दिये सखी बार,

छूटे ज्यौं पिटारे तें भुजंग सुत धाई कैं।।

सौंधौं कर डारैं मानों जादूगर मंत्र पढैं,

हाथ हू न आवैं ये रहे हैं बल खाइ कैं।

वृन्दावन हित रूप श्याम दुरि देखी नैंक,

दृष्टि मग ह्वै कै हलाहल चढ़यौ जाइ कै।।1।।

पट ही मंजूषा मानौं छिप्यौ हो जतन बहु,

मज्जन के समै खुल्यौ अद्भुत रतन तन।

चैंकि धुकि परी सखी शोभा हू न नीकैं लखी,

फैलि गई आभा कुंज लत्ता द्रुम वन घन।।

दामिनी निकर कै समूह शशि उदय भये,

किधौं रूप जाल किधौं तेज कौ मिल्यौ गन।

वृन्दावन हित रूप लाल द्रग नान्हीं ओक,

छवि सिंधु बाढ़यौ क्यों समात है विचारौ मन।।2।।

हीरन की चक्राकृति चौंकी पर बैठीं राधे,

उबटन करै सखी भीजीं हैं सनेह सौं।।

कौतुक में नैंन चौंधि रहे हैं विहंगन के,

बाढी वन महा जोति निकसी गौर देह सौं।।

मिश्रित सुगंध जल उष्ण सौं न्हवावति हैं,

विथुरे हैं बार अंग अंग गति अछेह सौं।
वृन्दावन हित रूप मानौं शशि आसन कैं,
राजति है दामिनि लपेटी जैसें मेह सौं।।3।।
कोऊ कर मलैं कोऊ परसे मृदु अंगनि कौं,
कोऊ बढावति हैं हास वचन सुकेलिन में।
कोऊ जल सीचैं कोऊ छवि कौं निहारि छकीं,
कोऊ अँगौछैं तन नेह अति ही नवेलिन में।।
चुनि पहरावति हैं पट नाना रंगनि के,
राजति हैं राधा जू यौं मुदित सहेलिन में।
वृन्दावन हित रूप उपमा अभूत ऐसैं,
दामिनी उरझि रही मानौं छवि वेलिन में।।4।।
डारिकैं फुलेल पाटी पारति हैं पाछैं वैठीं,
लै लै फूल नाना भांति विधिसों रचति हैं।
इत उत तें सुकर समटि सखी केशन कौं,
दै-दै गाढे बंधन यों डोरी सौं खचति हैं।।
मानों अहि घरनी तपित लोट कंजन पै,
कैंधों मत्त कनक के चौंहटे नचति हैं।
वृन्दावन हित किधौं सुधा पान करिवे कौं,

राका शशि ढ़िंग जान चढिवे कौं पचत हैं।।5।।

जो जो सखी आवति सिंगारिवे कौं प्यारी ढ़िंग,

सो सो अंग षोभा देखि अपनपौ बिसरि जात।

कोऊ नेह घूंमति सी झूंमित सी कोऊ ठाढ़ी,

कोऊ भूली पलकैं न आवै मुख कही बात।।

मज्जन के समै रूप सिंधु मरयाद तजी,

छबिकी लहर बाढ़ी ऐसै कमनीय गात।

वृन्दावन हित रूप हिय भूमि बोरी प्रेम,

प्रीतम सखिन नैंन मीन भये गोता खात।।6।।

पहिरिकैं दुकूल बैठीं तिलक त्रियन राधा,

देखौ गति आलिन की संभ्रम बढावत हैं।

सांवरी सहेली आइ सुविधि सिंगारै अंग,

जाके मन धीर बड़ौ नेह कौं जनावत हैं।।

वृन्दावन हित रूप नख सिख बनाय रची,

अंजन की रेखा दैकैं माला पहिरावत हैं।

दर्पण कर लैकैं लडैंती जू विलोकैं मुख,

आपने ही रूप कौ न आप पार पावत हैं।।7।।

छिन छिन प्रेम के खिलौना भये रहैं दोऊ,

ऐसी कछु अंगनि सहज बानि परी है।

सहज ही मोहिनी बसत वचन माधुरी में,

सहज ही सखिन की गति मति हरी है।।

सहज ही पीय मन लाड़ अभिलाषा उठैं,

सहज ही लड़ैती सब पूरन सो करी है।

वृन्दावन हित रूप रस की जहाँ आठौ याम,

सहज ही लागी रहै दुहूँ ओर झरी है।।8।।

इति श्री श्रृंगार अष्टक सम्पूर्ण

श्रृंगार विलास

(4)

कैसौ फव्यौ है नीलांबर सुंदर,

मोहि लिए मन मोहन माई।

फैलि रही छवि अंगनि कांति,

लसै बहु भाँति सुदेस सुहाई।।

सीस कौ फूल सुहाग कौ छत्र,

सदा पिय के मन कौं सुखदाई।

और कछू न रुचै ध्रुव पीय कौं,

भावै यहै सुकुमारि लड़ाई।।

(5)

गोरे से गात फव्यौ पट नीलऽरु,

श्याम के गात में पीत-पटा।

श्रुति भूषन कानन राजैं इतै,

उत कुण्डल लोल कपोल छटा।।

नव दामिनी सी चमकाति प्रिया,

अति चंचल ज्यौं बिच स्याम घटा।

बन-बानिक कौ सुख हेरैं हँसैं,

'हित नेह' रँग दोऊ ठाढ़े अटा।।4।।

(6)

छबि के छिपाइबे कौं रस के बढ़ाइबे कौं,

अंग-अंग भूषन बनाये हैं बनाइ कै।

देखैं नासापुट वेह प्रीतम भये विदेह,

याही हेत बेसरि बनाई धरी चाई कै।।

रोम-रोम जगमगैं रूप की पानिप अति,

सकैं न सँभारि हँसि चितई सुभाइ कै।

'हित ध्रुव ' विवस लटकि जात छिन-छिन,

यातें सखी सोभा सब राखी है दुराइ कै।।6।।

(7)

ऐसी है ललित प्यारी लाल जू की प्रान-प्यारी,

डीठहू न ठहराति कैसैं कै निहारियै।

जाकी परछाँई पर कोटि-कोटि चंद अरु,

दामिनी भामिनि काम कोटि-कोटि वारियै।।

काजर की रेख जहाँ पाननि की पीक भारी,

और सुकुमार ताई कैसैं के विचारियै।

सहजहि अंग-अंग रूप सार मोद मई,

'हित ध्रुव ' प्रान न्यौछावर करि डारियै।।

(8)

धूप आरती

आज नीकी बनी राधिका नागरी।

ब्रज जुवति जूथ में रूप अरू चतुरई,

शील सिंगार गुन सबन तें आगरी।

कमल दक्षिण भुजा वाम भुज अंस सखी,

गावती सरस मिलि मधुर स्वर रागरी।

सकल विद्या विदित रहसि श्री हरिवंश हित,

मिलत नवकुंज वर श्याम बड़भागरी।

(9)

श्रृंगार भोग

जेंवत री माई ये रस भोगी सामाँ परसति सखी मन मुद भरि।
सुभग जलेबी लाडू खुरमा घेवर चन्द्रकला कमनी करि।।
रूचिर दूध फल मोदक मठरी चारू अमिरती कौ तिन सरवरि।
खोवा दूध मलाई मिश्री मेवा बिबिध भाँति चुनि चुनि धरि।।
गूझा खाजा फैंनी बूँदी दधि अति मिश्ट रूचित राधा हरि।
परम सलौने रचे त्रिकौनैं ग्रास लेति परसंसति नागरि।।
सक्करपारे और मिष्ट फल लाइ प्रीति सौं देति हैं सहचरि।
कौर लेत पुनि स्वाद बखानत रसना रस चसकै जु परी ढरि।।
बीच बीच बातनि में उरझत मुख तें मनु सुख बीज परत झरि।
त्रिपित भये अँचवन पुनि बीरी वृन्दावन हित रूप देति अनुसरि।।

(10)

आजु सोभित नव सिंगार, राधा रंग भरी।
तन झलकत रूप अपार, राधा रंग भरी।।
नख सिख लौ परम सुकुँवार, राधा रंग भरी।
प्रीतम संग प्रेम विहार, राधा रंग भरी।।
श्रवननि लौं नैन विसाल, राधा रंग भरी।
केसर की आड़ बनी भाल, राधा रंग भरी।।

बैंदा जराव को लाल, राधा रंग भरी।
मृदु मुसकनि अति रसाल, राधा रंग भरी।।
अलकावलि रूरत कपोल, राधा रंग भरी।
चितवन नैनन की लोल, राधा रंग भरी।।
तन झलकत नील निचोल, राधा रंग भरी।
नित नवल कैलि कल्लोल, राधा रंग भरी।।
कुच जुग पै बसन सुरंग, राधा रंग भरी।
उपजत मद मैन तरंग, राधा रंग भरी।।
छवि मोहिनी महा अनंग, राधा रंग भरी।
सोहत ललितादिक संग, राधा रंग भरी।।
रस मत्त हास परिहास, राधा रंग भरी।
पिय मन हर सुभग सुवास, राधा रंग भरी।।
अवधि रस केलि विलास, राधा रंग भरी।
हित को रस रूप प्रकास, राधा रंग भरी।।
अनुराग सिंधु को सार, राधा रंग भरी।
वृन्दावन नित्त विहार, राधा रंग भरी।।
पिय जीवत वदन निहार, राधा रंग भरी।
“सलोनी” प्राणाधार, राधा रंग भरी।।

(11)

बनी वृषभानुनन्दिनी आजु।

भूषन -बसन बिबिध पहिरैं तन पिय मोहन हित साजु।।

हाव भाव लावन्य भृकुटि लट हरत जुवति जन पाजु।

ताल-भेद औघर सुर सूचत नूपुर किंकिनि बाजु।।

नव निकुंज अभिराम श्याम सँग नीकौ बन्यौ समाजु।

(जैश्री) हित हरिवंश बिलास-रास जुत जोरी अविचल राजु।।